Ijtimaai E'tikaaf Ki 17 Madani Bahaaren (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 292
Weekly Booklet : 292

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" की

एक क़िस्त बनाम

# इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 17 मदनी बहारें

सफ़हात 21


शिकारी ख़ुद शिकार हो गया ! 01
ए'तिकाफ़ की बरकत 05
ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात से तौबा 10
येह ए'तिकाफ़ क्या होता है ! 17

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दामत बरकातुहुमुल आलिया

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.


नामे रिसाला : **इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 17 मदनी बहारें**
सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., मार्च **2023** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**


मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

## इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 17 मदनी बहारें

येह रिसाला **(इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 17 मदनी बहारें)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

### क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

### किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(येह मज़्मून किताब ''फ़ैज़ाने रमज़ान'' सफ़ह़ा 402 ता 418 से लिया गया है ।)

# इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 17 मदनी बहारें

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा । (معجم اوسط، 5/252، حدیث:7235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 1 शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !

**एक** इस्लामी भाई ने जिस घराने में आंख खोली उस में जहालत का घुप अंधेरा था, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को مَعَاذَاللّٰه बुरा भला कहना कारे सवाब समझा जाता था । वोह भी इस ज़लालत व गुमराही में पूरी त़रह़ फंसे हुए थे, उन की तौबा के अस्बाब यूं हुए कि आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) के आख़िरी अ़शरे के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब थी, उन के मह़ल्ले के चन्द लड़के भी मो'तकिफ़

हो गए थे, उन्हें तंग करने की ग़रज़ से वोह मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चले आए, वहां सुन्नतें सिखाने के हल्क़े लगे हुए थे, वोह ताक में बैठ गए कि मौक़अ़ मिले तो शरारत शुरूअ़ करूं कि इतने में एक **आ़शिक़े रसूल** ख़ैर ख़्वाह ने बड़े ही प्यारे और दिल नशीन अन्दाज़ में उन्हें हल्क़े में बैठने के लिये कहा, उस की नरमी और आ़जिज़ी के बाइ़स वोह इन्कार न कर सके और हल्क़े में बैठ गए और मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान ध्यान से सुनने लगे। मुबल्लिग़ के बयान में अ़जीब कशिश थी, वोह आहिस्ता आहिस्ता बयान के मदनी फूलों के सेहर में गिरिफ़्तार होते चले गए। आ़शिक़ाने रसूल ने उन्हें बक़िय्या दिनों के ए'तिकाफ़ की दा'वत दी, उन्हों ने हामी भर ली और ए'तिकाफ़ की बहारें समेटने में मश्ग़ूल हो गए। वोह तो शिकार करने चले थे मगर "लो आप अपने दाम (या'नी जाल) में सय्याद (शिकारी) आ गया" के मिस्दाक़ ख़ुद ही शिकार हो कर रह गए। उन के लिये ए'तिकाफ़ में सभी कुछ नया था। दौराने ए'तिकाफ़ उन्हें अपनी गुमराही का पता चला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने बातिल अ़क़ाइद से तौबा की, कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और दा'वते इस्लामी के सफ़ीनए अहले सुन्नत में सुवार हो कर जानिबे मदीना रवां दवां हो गए। उन्हों ने अपना चेहरा मदनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ो शादाब कर लिया है। 63 दिन का मदनी सुन्नतों भरा कोर्स कर के दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ हल्क़ा ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ की भी कोशिश करने वाले बन गए। अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त उन्हें और हमें दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए और भटके हुवों को ह़क़्क़ो सदाक़त की राह दिखाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

*ख़त्म होगी शरारत की आ़दत चलो दीनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*दूर होगी गुनाहों की शामत चलो दीनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## 2 मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की थी

**एक** इस्लामी भाई वालिदैन के مَعَاذَاللہ इन्तिहाई दरजा गुस्ताख़ थे, क्रिकेट और बिल्यर्ड खेलने में दिन बरबाद करते और रात विडियो सेन्टर की ज़ीनत बनते। माहे रमज़ानुल मुबारक में मां बाप से उन्हों ने बहुत ज़ियादा लड़ाई की यहां तक कि घर में तोड़ फोड़ मचा दी ! अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़ुद भी बेज़ार थे, ग़ज़ब के जज़्बाती थे इसी लिये مَعَاذَاللہ कई बार ख़ुदकुशी की भी सई (या'नी कोशिश) की मगर اَلْحَمْدُلِلّٰہ नाकामी हुई। **अल्लाह** पाक के करम से उन को रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे में ए'तिकाफ़ का शौक़ पैदा हुवा, अपने घर की क़रीबी मस्जिद ही में ए'तिकाफ़ का इरादा था कि एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई, उन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰہ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतों के क्या कहने ! क्लीन शेव और पैन्ट शर्ट में कसे कसाए थे, मगर दीनी ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानात और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों ने वोह मदनी रंग चढ़ाया कि हाथों हाथ दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, इ़मामा शरीफ़ का ताज सर पर सजा लिया और चांदरात को ख़ूब रो रो कर गुनाहों से तौबा करने के बा'द घर जाने

के बजाए हाथों हाथ सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र पर रवाना हो गए। उन का कहना है : ख़ुदा की क़सम ! येह मेरी ज़िन्दगी की सब से पहली ईद थी जो बहुत अच्छी गुज़री। वापसी पर घर आ कर अम्मीजान के क़दमों से लिपट गए और इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं और बेहोश हो गए। कमो बेश आधे घन्टे के बा'द जब होश आया तो सारे घर वाले उन्हें घेरे हुए थे और तस्वीरे हैरत बने एक दूसरे का मुंह तक रहे थे कि इसे क्या हो गया है ! اَلْحَمْدُلِلّٰه घर में बहुत अच्छी तरकीब बन गई। उन्हें तन्ज़ीमी तौ़र पर अ़लाक़ाई मुशावरत का निगरान बनने और मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 63 दिन का सुन्नतों भरा कोर्स करने की सआ़दत भी ह़ासिल हुई। मज़ीद 126 दिन के "इमामत कोर्स" का सिल्सिला भी शुरूअ़ किया। अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त उन्हें और हमें इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

*बिगड़े अख़्लाक़ सारे संवर जाएंगे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*बस मज़ा क्या मज़े को मज़े आएंगे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 640, 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 3 मैं ने ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी !

**एक** इस्लामी भाई ने दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से मुन्सलिक होने से पहले कई "गर्ल फ्रेन्ड्ज़" बना रखी थीं, गन्दी ज़ेहनिय्यत का आ़लम येह था कि रोज़ाना ही गन्दी फ़िल्में देखा करते, ह़ैरत बालाए ह़ैरत येह है कि उन्हों ने **ज़िन्दगी में ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी** और उन्हें बिल्कुल भी मा'लूम नहीं था कि नमाज़ किस त़रह़ पढ़ी

जाती है !!! उन की क़िस्मत का सितारा चमका और उन्हें आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अशरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** नसीब हो गया, फ़ैज़ाने मदीना के दीनी माहोल की भी क्या बात है ! उन की आंखें खुल गईं, ग़फ़्लत का पर्दा चाक हुवा और नेकियों का जज़्बा मिला । اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ के पाबन्द हो गए। उन्हों ने दो मसाजिद में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ़ कर दिया । اَلْحَمْدُلِلّٰه इस्लामी भाइयों ने उन्हें एक मस्जिद की मुशावरत का ज़ैली निगरान बना दिया और उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का दीदार हो गया ।**

*जिसे चाहा जल्वा दिखा दिया, उसे जामे इ़श्क़ पिला दिया*
*जिसे चाहा नेक बना दिया, येह मेरे ह़बीब की बात है*
*जिसे चाहा अपना बना लिया, जिसे चाहा दर पे बुला लिया,*
*येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾4﴿ ए'तिकाफ़ की बरकत

**मेमन मस्जिद** में आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से **रमज़ानुल मुबारक** (1426 हि., 2005 ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक इस्लामी भाई ने ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की । सुन्नतों भरे बयानात, केसिट इज्तिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर ख़ूब मदनी रंग चढ़ाया, ए'तिकाफ़ की बरकत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़राद अभी तक घुप अंधेरी वादियों में

भटक रहे थे लिहाज़ा ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी। اَلْحَمْدُلِلّٰه वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुश्तमिल ख़ानदान ईमान वाला हो गया और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मुरीद बन गया।

*वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## 5 मैं पक्का दुन्यादार था

**एक** इस्लामी भाई पर दुन्या का धन कमाने ही की धुन सुवार रहती थी, अ़मली दुन्या से कोसों दूर गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे। اَلْحَمْدُلِلّٰه बा'ज़ आ़शिक़ाने रसूल की उन पर शफ़्क़त भरी नज़र पड़ गई, वोह रमज़ानुल मुबारक में बार बार उन के पास तशरीफ़ ले जाते और उन्हें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की दा'वत देते मगर वोह टाल दिया करते। مَاشَآءَاللّٰه वोह आ़शिक़ाने रसूल बहुत बुलन्द ह़ौसला थे, गोया मायूस होना जानते ही न थे, चुनान्चे उन्हों ने मज़्कूरा इस्लामी भाई को उन के ह़ाल पर छोड़ना गवारा न किया और वक़्तन फ़ वक़्तन नेकी की दा'वत दे कर अपना सवाब खरा करते रहे! उन की इन्फ़िरादी कोशिश बिल आख़िर रंग लाई और उस पक्के दुन्यादार का दिल भी पसीज ही गया और वोह आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1410 हि., 1990 ई.) में उन के साथ मो'तकिफ़ हो गए। ए'तिकाफ़ में उन को महसूस हुवा कि

आ़शिक़ों की दुन्या ही कोई और होती है ! आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने उन पर मदनी रंग चढ़ा दिया, اَلْحَمْدُلِلّٰه वोह **नमाज़ी** बन गए, **दाढ़ी** रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया। वहां उन्हें येह मस्अला भी सीखने को मिला कि क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ किये पेशाब वग़ैरा करना **ह़राम** है। सूए इत्तिफ़ाक़ से ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद के **इस्तिन्जा ख़ानों** का रुख़ ग़लत़ था। उन्हों ने रिज़ाए इलाही की ख़ातिर हाथों हाथ कारीगरों को बुलवा कर अपनी जेब से अख़राजात पेश कर के इस्तिन्जा ख़ानों के रुख़ दुरुस्त करवा लिये। اَلْحَمْدُلِلّٰه ए'तिकाफ़ के बा'द से अब तक उन्हें कई बार **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दतें मिल चुकी हैं।

*हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*जामे इ़श्क़े मुह़म्मद भी हाथ आएगा दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 6 मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये

**एक** इस्लामी भाई जब दसवीं क्लास के स्टूडन्ट थे, उन्हों ने अपने मह़ल्ले की बिलाल मस्जिद में रमज़ानुल मुबारक (1421 हि., 2000 ई.) के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया। वहां 14, 15 अफ़राद मो'तकिफ़ थे, ग़ालिबन 28 **रमज़ानुल मुबारक** को बा'दे नमाज़े ज़ोह्र उन के बचपन के एक क्लास फ़ेलो (जो बेचारे शराफ़त की वज्ह से उन की शरारत का निशाना बना करते थे) तशरीफ़ लाए, उन्हों ने अपने सर पर

इमामा शरीफ़ सजाया हुवा था, सलाम दुआ़ के बा'द उन्हों ने मो'तकिफ़ीन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए पूछा : आप में से बराहे मेहरबानी कोई नमाज़े ईद का त़रीक़ा सुना दे। सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे ! इस पर उन्हों ने कहा : अच्छा चलिये नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा ही बता दीजिये। येह भी उन में से कोई भी न बता सका। फिर मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने उन्हें नमाज़ की मश्क़ (Practical) करवाई। इस से उन की बहुत सारी ग़लति़यां उन के सामने आईं। इस के बा'द निहायत अह्सन अन्दाज़ में मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने उन्हें नमाज़े ईद और नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा सिखाया। जिस से उन का दिल बहुत ख़ुश हुवा। उस इस्लामी भाई का कहना है : "सच पूछो तो हमारे लिये ह़ासिले ए'तिकाफ़ येही था कि हमें मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की बरकत से मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के अहम अह़कामात सीखना नसीब हुए।" ईद की नमाज़ में उन्हें मस्जिद की छत पर जगह मिली, जब इमाम साह़िब ने दूसरी तक्बीर कही तो उस इस्लामी भाई के इ़लावा तक़रीबन सभी रुकूअ़ में चले गए ! ह़ालां कि येह रुकूअ़ का मौक़अ़ नहीं था बल्कि इस में हाथ कानों तक उठा कर लटकाने थे। ख़ैर, वरना वोह भी अ़वाम के साथ रुकूअ़ ही में होते मगर मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने ए'तिकाफ़ में नमाज़े ईद का त़रीक़ा सिखा दिया था। इस मौक़अ़ पर उन का दिल चोट खा गया और दा'वते इस्लामी की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो गई। उन्हों ने उस मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से ईद की मुलाक़ात पर अ़र्ज़ किया : मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये। इस पर मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने उन की ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी

कोशिश की बरकत से वोह बिल आख़िर आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आ गए और दा'वते इस्लामी के दीनी कामों के लिह़ाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर शो'बए ता'लीम के अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार भी बने।

*हां जनाज़ा व ईद इस को सीखें मज़ीद आएं मस्जिद चलें कीजिये ए'तिकाफ़*
*ख़ूब नेकी का जज़्बा मिलेगा जनाब ! आप हिम्मत करें कीजिये ए'तिकाफ़*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 7 मेरी आंखों में आंसू आ गए !

एक इस्लामी भाई ने रमज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1425 हि., 2004 ई.) के आख़िरी अ़शरे में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतें लूटने की सआ़दत ह़ासिल की और बुराइयों से तौबा की उन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तक नहीं आता था, ए'तिकाफ़ में दीगर सुन्नतों के इ़लावा खाने पीने की सुन्नतें भी सिखाई गईं। बिल ख़ुसूस एक मुबल्लिग़ को सादगी के साथ सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तनावुल करता देख कर उन की आंखों में बे इख़्तियार आंसू आ गए ! और उन्हों ने भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत अपना ली, यूं वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए।

*सुन्नतें खाना खाने की तुम जान लो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*मान लो बात अब तो मेरी मान लो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 8 आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली

इन्दौर शह्र (M.P. अल हिन्द) के एक फ़ैशन एबल नौ जवान आवारा और मॉडर्न दोस्तों की सोह़बत में रह कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। रमज़ानुल मुबारक (1425 हि., 2004 ई.) के आख़िरी अ़शरे में आ़शिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठ गए। आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली, गुनाहों से तौबा की सआ़दत मिल गई, चेहरे पर दाढ़ी जगमगाने और सर पर इ़मामा शरीफ़ की बहारें मुस्कुराने लगीं, सुन्नतों की ख़िदमत का ख़ूब जज़्बा मिला ह़त्ता कि मुबल्लिग़ बन गए। येह लिखते वक़्त अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान की हैसिय्यत से सुन्नतों की बरकतें लूट और लुटा रहे हैं।

*लेने ख़ैरात तुम रह़मतों की चलो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*लूटने बरकतें सुन्नतों की चलो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## 9 ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात रखने वालों की तौबा

एक शह्र में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका था, मगर उन दिनों दीनी काम वहां बहुत कम था। रमज़ानुल मुबारक (1410 हि., 1990 ई.) में वहां ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश कर के ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों ने वहां के इस्लामी भाइयों को इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के लिये अपने शह्र आने की दा'वत दी, जिस की बरकत से वहां के कसीर इस्लामी भाइयों ने मुनव्वरह मस्जिद में ए'तिकाफ़

की सआ़दत ह़ासिल की । क़ब्ल अज़ीं वहां कोई इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने वाला भी न था ! اَلْحَمْدُلِلّٰه इस इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से 17 इस्लामी भाई मुअ़ल्लिम व मुबल्लिग़ बने, चेहरों को दाढ़ी शरीफ़ से और सरों को सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ से सजाया । दा'वते इस्लामी के दीनी कामों के ज़िम्मेदार बने । बा'ज़ ऐसे लोग भी किसी त़रह़ से खिंच कर आ गए थे जो ग़ैर मुस्लिमों के कुछ ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात को दुरुस्त मानते थे, اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने अपने कुफ़्रिय्या नज़रिय्यात से तौबा की, कलिमा शरीफ़ पढ़ कर तजदीदे ईमान किया और बक़िय्या ज़िन्दगी आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में गुज़ारने की निय्यत की । اَلْحَمْدُلِلّٰه इस वक़्त उस शह्र के इस्लामी भाई जो कि रमज़ानुल मुबारक (1410 हि.) में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतों से मालामाल हुए थे वोह और ला दीनिय्यत से तौबा करने वाले अब बेहतरीन मुबल्लिग़ बन चुके हैं ह़त्ता कि बड़े बड़े इज्तिमाआ़त में भी सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाते हैं और मुख़्तलिफ़ सूबाई मजालिस के अहम ज़िम्मेदार बन कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश कर रहे हैं । **अल्लाह** करीम हमें और उन्हें दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

*प्यारे इस्लामी भाई चले आओ तुम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

## 10 अब गरदन तो कट सकती है मगर.....

एक इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश कर के अपने बे नमाज़ी और क्लीन शेव 26 सालह छोटे भाई को आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1421 हि., 2000 ई.) के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बिठा दिया। बे नमाज़ी और सुन्नतों से कोसों दूर रहने वाले उन के भाई पर ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा बरकत से वोह मदनी रंग चढ़ा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह पन्ज वक़्ता नमाज़ी बन गए और दाढ़ी मुबारक सजा ली और उन का यहां तक मदनी ज़ेह्न बन गया कि अब गरदन तो कट सकती है मगर दाढ़ी नहीं कट सकती।

*मीठे आक़ा की उल्फ़त का जज़्बा मिले दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*दाढ़ी रखने की सुन्नत का जज़्बा मिले दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 11 मिरगी का मरज़ दूर हो गया

मुम्बई की तह़सील कुर्ला (अल हिन्द) में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की जानिब से रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में एक ऐसे इस्लामी भाई भी मो'तकिफ़ हो गए जिन को हर दूसरे दिन मिरगी का दौरा पड़ता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ए'तिकाफ़ के दौरान उन्हें एक बार भी दौरा न पड़ा बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه ता दमे तह़रीर आज तक फिर उन्हें मिरगी की तक्लीफ़ नहीं हुई।

*इन شَآءَالله हर काम होगा भला — दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*दूर होगी ब फ़ज़्ले ख़ुदा हर बला — दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 641, 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की बरकत से اَلْحَمْدُلِلّٰه आफ़तें और बलाएं दूर होती हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه मिरगी का मरज़ भी ठीक हो गया कि उस को मस्जिद में दौरा ही न पड़ा, यक़ीनन येह उस पर **अल्लाह** पाक का ख़ुसूसी करम हो गया। ताहम येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि मिरगी के ऐसे मरीज़ और आसेब ज़दा जो उछलकूद करते, चीख़ते चिल्लाते हों या ऐसे मरीज़ जिन का बेहोशी में पेशाब वग़ैरा निकल जाता हो, नीज़ ऐसे तमाम अफ़राद जिन से लोगों को घिन आती, ईज़ा पहुंचती हो उन का ए'तिकाफ़ करना तो दूर रहा ऐसी ह़ालत में बा जमाअ़त नमाज़ के लिये भी मस्जिद के अन्दर आना जाइज़ नहीं।

## (12) मैं क्लीन शेव था

एक इस्लामी भाई क्लीन शेव थे, ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लतों में बसर हो रहे थे, इस्लामी भाइयों की तरग़ीब और ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में, उन्हों ने रमज़ानुल मुबारक (1425 हि., 2004 ई.) में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आ़शिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُلِلّٰه ए'तिकाफ़ में उन का दिल चोट खा गया, साबिक़ा

मआ़सी (या'नी ना फ़रमानियों) पर पशेमान (या'नी शरमिन्दा) हो कर बहुत रोए और आयिन्दा हमेशा हमेशा के लिये गुनाहों से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया, इमामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाया, दाढ़ी मुबारक रख कर अपने चेहरे को मदनी रंग चढ़ाया। اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी के तन्ज़ीमी डिवीज़न की एक तह़्सील मुशावरत के निगरान भी बने।

*सीखने को मिलेंगी तुम्हें सुन्नतें दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*लूट लो आ कर अल्लाह की रह़मतें दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 13 मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी

तक़्रीबन 25 सालह एक इस्लामी भाई ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। उन्हें ए'तिकाफ़ की बहुत सी बरकतें ह़ासिल हुईं, मिन जुम्ला राह चलते हुए बाज़ारी लड़कों की त़रह़ फ़िल्मी गीत गाने की जो आ़दत थी वोह निकल गई और اَلْحَمْدُلِلّٰه इस की जगह ना'त शरीफ़ गुनगुनाने की आ़दत पड़ गई। नीज़ ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाने (या'नी बुरी तो बुरी ग़ैर ज़रूरी बातों से भी बचने) का ज़ेह्न बना और उन का ऐसा ज़ेह्न बन गया कि जूं ही मुंह से फ़ुज़ूल बात सरज़द होती बत़ौरे कफ़्फ़ारा झट ज़बान पर दुरूद शरीफ़ जारी हो जाता।

*गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*बे जा बकबक की ख़स्लत भी टल जाएगी दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

## 14 मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते.....

मुम्बई (भायखला, अल हिन्द) में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1419 हि., 1998 ई.) में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में एक मॉडर्न नौ जवान ने (जो इलेक्ट्रॉनिक इन्जीनियर हैं) शिर्कत की । दस दिन तक आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत का ख़ूब फ़ैज़ उठाया, मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक का नूर चेहरे पर छाया, सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाया, ए'तिकाफ़ की बरकतों ने उन को सुन्नतों का अ़ज़ीम मुबल्लिग़ बनाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह दीन की ख़िदमतों में तरक़्क़ी करते करते ता दमे तह़रीर हिन्द मक्की काबीना के रुक्न की हैसिय्यत से सुन्नतों की बहारें लुटाने में कोशां हैं ।

*सारी फ़ैशन की मस्ती उतर जाएगी दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*ज़िन्दगी सुन्नतों से निखर जाएगी दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

## 15 मैं ने नशा कैसे छोड़ा!

एक इस्लामी भाई बे नमाज़ी और नशे के आ़दी थे, घर वाले उन की वज्ह से परेशान थे। ख़ुश क़िस्मती से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हो गई, वहीं ए'तिकाफ़ की निय्यत की और वक़्त आने पर मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) में मो'तकिफ़ हो गए। तीन दिन के इज्तिमाअ़ में अगर्चे आख़िरत की बेहतरी के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी ज़ेह्न बना था मगर इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तो क्या बात है! बस उन के तो दिल की दुन्या ही बदल गई, उन्हों ने गुनाहों से पक्की तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, हाथों हाथ सब्ज़ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया। ए'तिकाफ़ के बा'द जब अपने शह्र पहुंचे तो दाढ़ी और इमामा शरीफ़ में देख कर घर वाले और पड़ोसी वग़ैरा सब ह़ैरत ज़दा रह गए! اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन की नशे की आ़दत भी बिल्कुल छूट गई। अपनी बिसात़ भर दा'वते इस्लामी का दीनी काम करना शुरूअ़ कर दिया, **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से उन की बेटी ने दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में शरीअ़त कोर्स में दाख़िला ले लिया जब कि दो बच्चों ने मद्रसतुल मदीना में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करना शुरूअ़ कर दिया।

*गर मदीने का ग़म चश्मे नम चाहिये दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*मदनी आक़ा की नज़रे करम चाहिये दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 16 येह ए'तिकाफ़ क्या होता है !

एक इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बद मस्त रहते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहे थे। **अल्लाह** पाक का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उन के शह्र में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का दीनी काम शुरूअ़ हुवा और पहली बार दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से (1416 हि., 1995 ई.) शबे बराअत का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा, اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने उस में शिर्कत की। इज्तिमाअ़ में आ़शिक़ाने रसूल के दाढ़ी और इ़मामे वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बत भरी मुलाक़ातों ने उन्हें दा'वते इस्लामी से मुतअस्सिर तो किया मगर वोह दूर ही दूर रहे। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी कभी शिर्कत नहीं की ह़त्ता कि रमज़ानुल मुबारक (1416 हि., 1995 ई.) की सत्ताईसवीं शब आ पहुंची, उन्हों ने इज्तिमाअ़ वाली मस्जिद में होने वाली इज्तिमाई दुआ़ में ह़ाज़िरी दी, इख़्तिताम पर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात हुई और किसी ने बताया यहां कुछ इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ में बैठे हैं। उन के लिये येह लफ़्ज़ नया था, इस लिये उन्हों ने तजस्सुस के साथ पूछा : येह ए'तिकाफ़ क्या होता है ? इस्लामी भाइयों ने बड़ी मह़ब्बत के साथ उन्हें ए'तिकाफ़ के बारे में मा'लूमात फ़राहम करते हुए ए'तिकाफ़ की बा'ज़ मदनी बहारें बयान कीं। दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में किये जाने वाले ए'तिकाफ़ के अह़वाल सुन कर उन्हों ने दिल में पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَاللّٰه आयिन्दा साल ए'तिकाफ़ में ज़रूर बैठूंगा। चुनान्चे दिन गुज़रते गए और जब

रमज़ानुल मुबारक (1417 हि., 1996 ई.) की आमद हुई तो आख़िरी अ़शरे में आ़शिक़ाने रसूल के साथ वोह भी मो'तकिफ़ हो गए। दस शबाना रोज़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला।

*न पूछो हम कहां पहुंचे और इन आंखों ने क्या देखा*
*जहां पहुंचे वहां पहुंचे जो देखा दिल के अन्दर है*

**ए'तिकाफ़** में किसी ने दर्से निज़ामी का ज़ेह्न दिया, उन की समझ में आ गया चुनान्चे जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, ह़त्ता कि दौरए ह़दीस शरीफ़ के बा'द दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में (1425 हि., 2004 ई.) उन की दस्तार बन्दी की गई और उन को दा'वते इस्लामी के एक जामिअ़तुल मदीना में तदरीस की ख़िदमत अन्जाम देने की सआ़दत मिली।

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! एक ऐसा लड़का जिस को कल तक येह भी नहीं पता था कि **ए'तिकाफ़ क्या होता है !** वोह आज **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ करने की बरकत से दर्से निज़ामी से मुशर्रफ़ हो कर मुदर्रिस बन कर दूसरों को इल्मे दीन के फ़ैज़ान से मालामाल करने वाला बन गया।

*सुन्नतें सीख लो रह़मतें लूट लो, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*दीन के इल्म की बरकतें लूट लो, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## 17 वोह चोरियां भी कर लिया करते थे

**एक** इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मुश्कबार दीनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले مَعَاذَاللہ नमाज़ों में सुस्ती, विडियो गेम्ज़ का शौक़, T.V. पर रोज़ाना उलटे सीधे प्रोग्राम देखना, झूट की आदत यहां तक कि चोरियां भी कर लिया करते थे। ख़ुश क़िस्मती से आख़िरी अशरए रमज़ानुल मुबारक (1421 हि., 2000 ई.) में जामेअ मस्जिद आमिना में दा'वते इस्लामी के आशिक़ाने रसूल के साथ उन्हें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की सआदत मिल गई। उन्हों ने आमिना मस्जिद की दूसरी मन्ज़िल पर दा'वते इस्लामी के क़ाइम कर्दा मद्रसतुल मदीना में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करते रहे और اَلْحَمْدُلِلّٰہ उन की कोशिशों से उन के घर में भी दीनी माहोल बन गया वोह घर के अन्दर मक्तबतुल मदीना की तरफ़ से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलाया करते। اَلْحَمْدُلِلّٰہ क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ कर लेने के बा'द जामिअतुल मदीना में दर्से निज़ामी करना शुरूअ कर दिया और मद्रसतुल मदीना में तदरीस की भी तरकीब रखी और अपने ज़ैली मुशावरत के निगरान के मा तहूत रह कर आशिकाने रसूल की दीनी तहरीक, दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धूमें मचाने की भी कोशिशें फ़रमाने लगे।

*तुम गुनाहों से अपने जो बेज़ार हो दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
*तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, लुत्फ़े सरकार हो मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## फ़रमाने आख़िरी नबी ﷺ

مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّاِحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ

या'नी जिस शख़्स ने ईमान के साथ और सवाब हासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया, उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

(جامع صغیر، ص516، حدیث:8480)